ज्ञान शांति मैत्री

मीडिया समय

tulpkj foHkkx d! fo|kfFk;ksa dk ik;ksfxd v[kckj

27 ekp] 2019 oèkk] egkjk"V!

पुरोधा संपादकों का पुण्य स्मरण करेंगे हरिवंश

वर्धा रेलवे स्टेशन पर राज्यसभा के उपसभापति का स्वागत करते विवि के अधिकारी।

वर्धा। राज्यसभा के उप सभापति और सुपरिचित पत्रकार हरिवंश आज 27 मार्च 2019 को सुबह वर्धा पहुंचे। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की तीन दिनों की यात्रा पर आए हैं। हरिवंश हिंदी के चार पुरोधा संपादकों पर चार विशेष व्याख्यान देंगे। उनका पहला विशेष व्याख्यान गणेश मंत्री पर 27 मार्च 2019 को शाम चार बजे गालिब सभागार में होगा।

हरिवंश कल 28 मार्च 2019 को पूर्वाह्न 10 बजे समता भवन के सभा कक्ष में नारायण दत्त पर और शाम चार बजे गणेश मंत्री पर विशेष व्याख्यान देंगे। हरिवंश 29 मार्च 2019 को पूर्वाह्न 10 बजे समता भवन के सभा कक्ष में प्रभाष जोशी पर विशेष व्याख्यान देंगे। उल्लेखनीय है कि हरिवंश 1989 से 2014 तक 'प्रभात खबर' के प्रधान संपादक थे। अप्रैल 2014 में राज्यसभा का सदस्य बनने के बाद हरिवंश 'प्रभात खबर' से इस्तीफा दे दिया। पिछले साल वे राज्यसभा के उपसभापति निर्वाचित हुए। उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के सिताबदियारा गांव में 30 जून 1956 को जन्मे हरिवंश ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एमए और पत्रकारिता में डिप्लोमा किया। पढ़ाई के दौरान ही टाइम्स ऑफ इंडिया समूह, मुंबई में प्रशिक्षु पत्रकार के रूप में उनका 1977–78 में चयन हुआ।

प्रशिक्षण पूरा करने के बाद वे 'धर्मयुग' में उप संपादक बने और वहां 1981 तक कार्यरत रहे। उसके बाद 1981 से 1984 तक वे हैदराबाद एवं पटना में बैंक अधिकारी के रूप में पदस्थापित रहे। लेकिन 1984 में उन्होंने पत्रकारिता में वापसी की और आनंद बाजार पत्रिका समूह द्वारा प्रकाशित 'रविवार' में सहायक संपादक बने। वहां वे अक्टूबर 1989 तक रहे। फिर महानगरों की पत्रकारिता और बड़े घरानों को छोड़कर उन्होंने एक छोटे शहर रांची में प्रायः बंद हो चुके अखबार 'प्रभात खबर' में प्रधान संपादक के रूप में काम शुरू किया। नए प्रयोगों और जन सरोकारों से जुड़कर हरिवंश ने न सिर्फ 'प्रभात खबर' को स्थापित किया, अपितु पत्रकारिता को नया आयाम भी दिया। 1990–91 के कुछ महीनों तक हरिवंश तत्कालीन प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के अतिरिक्त सूचना सलाहकार रहे। हरिवंश की कई किताबें प्रकाशित होकर समादृत हुई हैं जिनमें प्रमुख हैं– 'दिल से मैंने दुनिया देखी', 'जन सरोकार की पत्रकारिता', 'झारखंडः दिसुम मुक्तिगाथा और सृजन के सपने', 'जोहार झारखंड', 'संथाल हूल', 'झारखंडः अस्मिता के आयाम', 'झारखंडः सुशासन अब भी संभावना', 'झारखंडः समय और सवाल', 'झारखंडः सपने और यथार्थ', 'बिहारनामा', 'बिहारः रास्ते की तलाश', 'बिहारः अस्मिता के आयाम'। हरिवंश ने चंद्रशेखर से जुड़ी किताबों का भी संपादन किया जिनमें उल्लेखनीय हैं–'मेरी जेल डायरी' (दो खंडों में), 'उथल–पुथल और ध्रुवीकरण के बीच', 'रचनात्मक बेचैनी में', 'एक दूसरे शिखर से' और 'चंद्रशेखर के विचार'। इसके अलावा कई चर्चित लोगों द्वारा संपादित अंग्रेजी पुस्तकों में भी हरिवंश की रचनाएं प्रकाशित हुई हैं।

हरिवंश हिंदी के सर्वश्रेष्ठ संपादक

'प्रभात खबर' को अपने क्षेत्र में प्रभावशाली अखबार बनाने के लिए हरिवंश ने उन जगहों पर खुद जाकर समझा, बात. चीत की और उसके निष्कर्ष निकाले।

–राम बहादुर राय

पुस्तक से

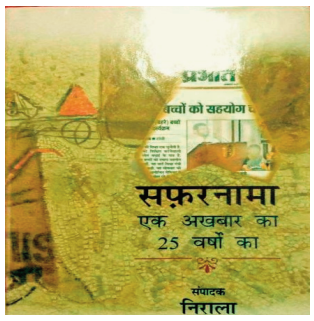

हरिवंश हिंदी के सर्वश्रेष्ठ संपादक हैं।

–केदारनाथ सिंह

'प्रभात खबर' को बाहर–अंदर जितना मैंने देखा है, उसमें संपादक शब्द पर हरिवंश का नाम मुझे अक्सर ऊपर और बड़ा लगा है क्योंकि दो दशकों से कोई शख्स बतौर संपादक एक अखबार को जीवन से जोड़ने में लगा हो, वह महज संपादकीय जरूरत नहीं हो सकती।

– पुण्यप्रसून वाजपेयी

प्रो. गिरीश्वर मिश्र करेंगे कार्यक्रम की अध्यक्षता

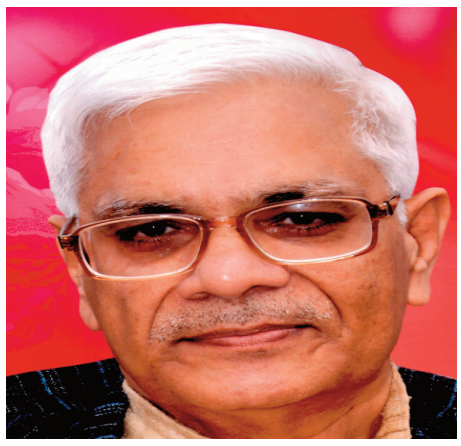

वर्धा। राज्यसभा के उप सभापति हरिवंश के पहले विशेष व्याख्यान की अध्यक्षता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र करेंगे। प्रो. मिश्र की ख्याति शिक्षाविद्, मनो. विज्ञानी तथा हिंदी भाषा–साहित्य–संस्कृति के गंभीर अध्येता के रूप में है। वे देश–विदेश में संस्कृति और समाज के अंतर्संबंधों के व्याख्याता के रूप में समादृत हैं। भारतीय संस्कृति के व्याख्याकार के बतौर उन्होंने जर्मनी, संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड, रूस, चीन, इंडोनेशिया, स्वीडन की शैक्षिक यात्रा की है। उन्होंने अमेरिका में मि. शिगन, न्यू स्कूल आफ सोशल रिसर्च तथा स्वार्थमोर कालेज, फिलाडेल्फिया में फुल्ब्राइट फेलो तथा ससेक्स विश्वविद्यालय, ब्रिटेन में फेलो के रूप में अध्यापन और शोध किया है। प्रो. मिश्र ने चार दशकों से ज्यादा समय तक गोरखपुर, इलाहाबाद, भोपाल और दिल्ली विश्वविद्यालयों में अध्यापन करने के बाद मार्च 2014 में महात्मा गांधी अंत. रराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति का दायित्व संभाला। उनके नेतृत्व में पिछले पांच वर्षों में हिंदी विश्वविद्यालय ने नई अकाद. मिक ऊंचाई हासिल की। विश्वविद्यालय को नैक का 'ए' ग्रेड मिला। मनोविज्ञान के विभिन्न विषयों पर सेज, आक्सफोर्ड, कै. म्ब्रिज, वाईली, पियर्सन आदि अंतरराष्ट्रीय प्रक. ाशनों से प्रो. मिश्र का कार्य प्रका. शित है। स्प्रिंगर द्वारा प्रकाशित 'साइकोलाजिकल स्टडीज' नामक शोध पत्रिका के वे मुख्य संपादक हैं। वे भारत के नेशनल एकेड. `मी आफ साइकोलोजी के अध्यक्ष रह चुके हैं और उसके मानद फेलो और सलाहकार हैं। बर्लिन (जर्मनी) और केप टाउन (दक्षिण अफ्रीका) में आयोजित मनोविज्ञान के विश्व सम्मेलनों में उन्होंने आमंत्रित व्याख्यान दिया है। वे भारत की सामाजिक अनुसंधान परिषद् के सदस्य और फेलो रहे हैं। भारतीय स्व की अवधारणा, सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य, अंतर्सामूहिक सम्बन्ध, गरीबी और वंचन के मानसिक परिणाम, संस्कृति और मानसिक जीवन, संवेग और संस्कृति, बुद्धि और सर्जनात्मकता का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, गुणात्मक शोध विधि तथा भारतीय चिंतन के मना. `वैज्ञानिक पक्ष जैसे विषयों पर प्रो. मिश्र के शोध को देश–विदेश में ख्याति मिली है। हिंदी की पत्र–पत्रिकाओं में वे सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक सरोकारों और समसामयिक विषयों पर पर नियमित स्तंभ लेखन करते हैं। हिंदी में उनकी कई किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। पिछले वर्ष ही उनकी तीन पुस्तकें–'होने और न होने का सच', 'हिंदीः भाषा और समाज', 'भारत में शिक्षाः चुनौतियां और अपेक्षाएं' प्रकाशित हुईं। अंग्रेजी में मनोविज्ञान पर उनकी 27 पुस्. तकें तथा अनेकानेक शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं।

जेंडर समानता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

शुभम सिंह, वर्धा। जेंडर समानता की गांधीवादी दृष्टि : शक्ति एवं संभावनाएं विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय के गालिब में सभागार दिनांक 28–30 मार्च, 2019 को हो रहा है। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य जेंडर समानता की मुख्य अवधारणा और नारी सशक्तीकरण की दिशा में गांधी जी के योगदान का अध्ययन एवं विश्लेषण करना है। गांधीजी के जेंडर समानता संबंधी विचारों का व्यापक अध्ययन स्त्रीवादी दृष्टिकोण से अधिक प्रा. संगिक है। इस संगोष्ठी का आयोजन स्त्री अध्ययन विभाग द्वारा किया जा रहा है। स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी अध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक ने बताया कि यह संगोष्ठी महिला सशक्तीकरण की दिशा में अनुसंधान एवं रणनीतियों की खोज की संभावनाओं की दिशा तय करेगा। साथ ही इस संगोष्ठी में समतामूलक समाज बनाने की प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका और उसकी संभावनाओं पर भी मंथन होगा।

भारती के योग्य उत्तराधिकारी सिद्ध हुए गणेश मंत्री

गौरव। धर्मवीर भारती के बाद गणेश मंत्री 'धर्मयुग' के संपादक हुए और भारती के योग्य उत्तरा. धिकारी साबित हुए। टाइम्स ऑफ इण्डिया समूह में गणेश मंत्री ने प्रशिक्षु पत्रकार के रूप में कार्य शुरू किया था और 'धर्मयुग' के सम्पादक पद तक पहुँचे।

शुरू से ही अपने काम के लिए वे जाने जाते थे। पत्रका. रिता के ऊंच्च मापदंड स्थापित करने के लिए उनका नाम काफी आदर से लिया जाता है।हर दायित्व उन्होंने इस खूबी के साथ निभाया कि न तो पत्रकारिता में समझौता किया न ही कभी सिद्धांतों से। संपादक के समानांतर उनकी ख्याति समाजवादी विचारक के रूप में है। गणेश मंत्री ने 'समता अध्ययन न्यास' गठित किया और देशभर में समाजवादी आन्दोलन की गतिविधियों को आगे बढ़ाया। उन्होंने जो और जैसा सोचा, वैसा ही कहा, वैसा ही लिखा और वैसा ही किया भी। गणेश मंत्री ने 'रविवार' और 'चौथी दुनिया' में गजानन चिटणिस के नाम से भी लेखन किया। गजानन यानी गणेश और मराठी में मंत्री को चिटणिस कहते हैं। गणेश मंत्री ने अपने लगभग साढ़े तीन दशकों के पत्रकार जीवन में सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समस्याओं पर विपुल मात्रा में लेखन किया। विषय का गहन अध्ययन, पैना विश्लेषण और सशक्त प्रतिपादन उनके लेखन की विशेषता है। उनकी प्रकाशित पुस्तकें हैं–'रूस–चीन विवाद', 'मार्क्स, गांधी और सामयिक संदर्भ', 'राजधानी कल्चर', 'गोआ मुक्ति संघर्ष', 'समता दर्शन' और 'विषमता'। 11 अप्रैल 1998 को उनका 60 वर्ष की उम्र में निधन हो गया।

मीडिया समय

ज्ञान शांति मैत्री

tulpkj foHkkx dk fo|kFkhZ;ksa dk ikf{kd v[kckj

27 ekpZ 2019 oèkkZ] egkjk"V

कैनवास पर अंतर्मन के द्वंद

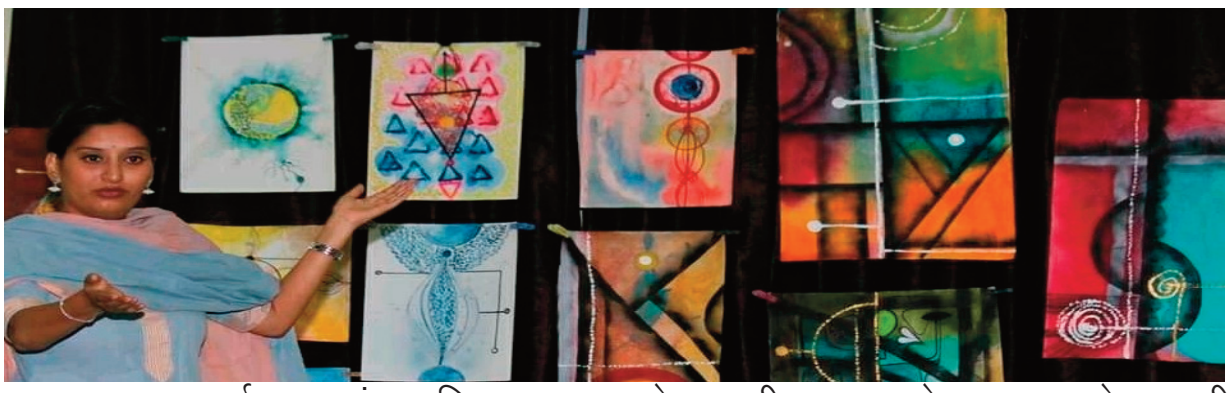

पूजा पाठक, वर्धा। जनसंचार विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'रचना समय' के अंतर्गत पी–एच.डी. शोधार्थी सुधा वर्मा के चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी में अंतर्मन शृंखला की 15 चित्रकृतियां थीं और चार चित्रकृतियां परिवेश से संबंधित थीं। इस अवसर पर सुधा वर्मा ने बताया कि किस तरह उन्होंने अपने मन में चल रहे द्वंद्व को अमूर्त चित्रकारी के माध्यम से कैनवास पर उकेरा। सुधा वर्मा ने प्रसिद्ध लेखक आशीष कौल की पुस्तक रेफ्यूजी कैंप और दिद्दा: द वॉरियर क्वीन ऑफ कश्मीर की प्रति विभागाध्यक्ष प्रो. कृपाशंकर चौबे तथा एडजंक्ट फैकल्टी अरुण कुमार त्रिपाठी को भेंट की। इन दोनों किताबों का आवरण सुधा वर्मा ने ही तैयार किया है। कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित विभाग के एडजंक्ट फैकल्टी अरुण कुमार त्रिपाठी ने कहा कि सुधा वर्मा ने मन में चल रहे द्वंद को अपनी कला के माध्यम से बखूबी अभिव्यक्त किया है। मानव शास्त्र विभाग के सहायक प्राहै। मानव शास्त्र विभाग के सहायक प्रोफेसर डा. वीरेंद्र प्रताप यादव और जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों–नेहा ओझा, कुमारी नेहा, तेजी ईशा, अजय कुमार, संदीप कुमार दुबे, सद्दाम हुसैन, अमित मिश्रा और वैभव उपाध्याय ने भी सुधा वर्मा के चित्रों पर अपने विचार व्यक्त किये। विभागाध्यक्ष प्रो. कृपाशंकर चौबे ने सुधा वर्मा की चित्रकृतियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इतिहास गवाह है कि कोई भी बड़ा कलाकार किसी प्रशिक्षण का मोहताज नहीं होता। चाहे वह अवनींद्र नाथ ठाकुर हों या सत्यजीत रे, उन्होंने अपनी कला का विकास साधना से किया। कार्यक्रम का संयोजन पी–एच.डी. शोधार्थी वैभव उपाध्याय एवं एम.ए. की छात्रा कुमारी नेहा ने किया।

संचार के सिद्धांतों पर पुनर्विचार आवश्यक है : चौधुरी

वर्धा। जनसंचार विभाग में व्याख्यान का आयोजन हुआ, जिसके मुख्य वक्ता विश्वभारती, शांतिनिकेतन के जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर बिप्लब लोहो चौधुरी ने संचार की नई परिभाषा पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि पहले के जितने भी संचार के प्रतिरूप व सिद्धांत, नियम हैं उन पर पुनर्विचार करना जरूरी है जिससे वर्तमान समय में संचार की प्रक्रिया को और भी आसानी से समझ कर लागू किया जा सके।

विभाग में मीडिया विशेषज्ञ

आशुतोष कुमार सिंह व प्रसून लतांत विभाग में संवाद करते हुए

दैनिक भास्कर के समन्वय संपादक आनंद निर्बाण जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों से संवाद करते हुए

जनसंचार विभाग में भविष्य की मीडिया पर व्याख्यान देते माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर संजय द्विवेदी

जनसंचार विभाग से 'चले गांव की ओर' कार्यक्रम के लिए रवाना होते छात्र-छात्राएं।

अंक संपादक : गौरव गुलमोहर